

शेर की खाल में गधा

एक शहर में शुद्धपट नाम का धोबी रहता था। उसके पास एक गधा भी था। घास न मिलने से वह बहुत दुबला हो गया। धोबी ने तब एक उपाय सोचा। कुछ दिन पहले जंगल में घूमते-घूमते उसे एक मरा हुआ शेर मिला था, उसकी खाल उसके पास थी। उसने सोचा यह खाल गधे को ओढ़ा कर खेत में भेज दूंगा, जिससे खेत के रखवाले इसे शेर समझकर डरेंगे और इसे मार कर भगाने की कोशिश नहीं करेंगे।

धोबी की चाल चल गई। हर रात वह गधे को शेर की खाल पहना कर खेत में भेज देता था। गधा भी रात भर खाने के बाद घर आ जाता था।

लेकिन एक दिन यह पोल खुल गई। गधे ने एक गधी की आवाज सुन कर खुद भी अरझाना शुरू कर दिया। रखवाले शेर की खाल ओढ़े गधे पर टूट पड़े, और उसे इतना मारा कि बिचारा मर ही गया। उसकी वाचालता ने उसकी जान ले ली।

मेर की पाल में गण

एक मकर में सुझूपए नाम का ऐमी रकडा था। उमके पाम एक गण ही था। आम न भिलने में वरु मरुत डगला के गया। ऐमी ने उम एक उपाय भेगा। कुळ दिन परले एंगल में अभुं-अभुं उमें एक भरा क्रम मेर भिला था, उमकी पाल उमके पाम थी। उमने भेगा वरु पाल गणे के उडा कर पेट में हरे डंगा, एभमे पेट के रापवाले उमें मेर मभाकर करंगे। उर उमें भार कर रगाने की केमिम नकी करंगे।

ऐमी की पाल गल गरें। कर राउ वरु गणे के मेर की पाल परना कर पेट में हरे डडा था। गण ही राउ रर पाने के गद पर सु रडा था।

लेकिन एक दिन वरु पेल पल गरें। गणे ने एक गणी की सुवाए भन कर पद ही सरराना मुरु कर दिया। रापवाले मेर की पाल उडे गणे पर एए परे, उर उमें उतना भार कि गिगारा भर ली गया। उमकी वापालडा ने उमकी रन ले ली।

मनुवाए - पृगवा ररु